गंगा सहस्र नाम स्तोत्र

पेज - 2-15 = 14

- अपूर्ण

- 15.2 x 13 x 0.4 cm.

उत्पत्ति स्थिति संहार कारिणयुपरिचारिणी ॐ

... ...

पुरतस्त्वरन् निर्वाण काशाना द्त्र कारीति प्रयिपुरी

2

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणीपरिचारिणी ऊ
र्जेवेहंत्यूर्जेधरोजीवतांवतीचौमिमालिनी ॥१७॥
ऊर्ध्वरेतःप्रियोर्ध्वोर्ध्वोह्र ऊर्ध्वलोकैकगतिप्रद
ऋषिवृंदस्तुतर्द्धिऋक्षऋणत्रयविनाशिनी ॥१८॥
ऋतंभरर्द्धिदात्रीच ऋक्षस्वरूपाऋजुप्रियाऋ
क्षमार्गवहर्क्षार्चिऋजुमार्गप्रदर्शिनी ॥१९॥ ए
धिताखिलधर्मार्चीत्वेकैकानृतदायिनी
एधिनीयस्वभावैन्यात्वेजिताशेषपातका ॥२०॥
ऐश्वर्यदैश्वर्यरूपाह्यैतिह्यंह्यैंदवीद्युति ओ
जस्विन्योषधीतेत्रमोजोदोदनदायिनी ॥२१॥
औष्ठामृतौन्नत्यदात्रीत्वौषधंभवरोगिणां औ
दार्यचंचुरौपेंद्रीत्वौग्रीह्यौमेयरूपिणी ॥२२॥ अं

॥ कराक्षवहंकसं करमालावृजेद्दला कंविकांवुम
हायोनिरंघोदंघकह्नारिणी॥ कंसुमालाह्लंसुम
तीत्वंगीवत्तसडानना ॥ कंघत्ताभिस्रहंत्स्यंघुरंज
नाह्लंजनावती ॥२३॥ कंल्याणकारिणी काम्या कम
लोत्पलसुगंधिनी कुंकुष्ठिती कमलिनी कांतिः क
ल्पितदायिनी ॥२४॥ कांचनानना क्षीकामधेनुः कीर्त्ति
क्लेशनाशिनी ॥ क्रतुश्रेष्ठा क्रतुफला कर्मबंध
विभेदिनी ॥२६॥ कमलाक्षी क्लमहरा कृशानुतप
नद्युतिः करुणार्द्रा च कल्याणी कलिकल्मष
नाशिनी ॥२७॥ कामरूपा क्रियाशक्तिः कमलो
त्पलमालिनी ॥ कूटस्था करुणा कांता कूर्मया
नाकलावती ॥२८॥ कमलाकललतिकाली का
कलुषवैरिणी ॥ कमनीयजलाकमाकपर्दिसु

॥२

कदर्पिका ॥२८॥ कालकूलप्रशमनी कदंबकुसुमप्रि
या ॥ कालिंदीकेलिललिता कलकल्लोलमालिका
॥३०॥ क्रांतलोकत्रया कद्रूः कद्रूतनयवत्सला ॥
खड्गिनी खड्गधाराभा खगा खंडेंदुधारिणी ॥३१
खेखेलगामिनी खस्था खंडेंदुतिलकप्रिया ॥
खेचरी खेचरीवंद्या ख्यातिः ख्यातिप्रदायिनी ॥
३२ ॥ खंडितप्रणताघौघा खलबुद्धिविनाशिनी ॥
खातैनःकंदसंदोहा खड्गखट्वांगखेटिनी ॥३३
खरसंतापशमनी खनिः पीयूषपाथसां ॥ गंगा
गंधवती गौरी गंधर्वनगरप्रिया ॥३४॥ गंभीरांगी
गुणमयी गतातंका गतिप्रिया ॥ गणनाथांबिका
गीता गद्यपद्यपरिष्टुता ॥३५॥ गांधारी गर्भशम
नी गतिभ्रष्टगतिप्रदा गोमती गुह्यविद्या गोर्गो
श्री गगनगामिनी ॥३६॥ गोत्रप्रवर्द्धिनी गुण्या ग

॥३॥ लातीतागुलागुल्मिः गुहांबिकागिरिसुतागोविंदां
घ्रिसमुद्भवा ॥३३॥ गुणनीयचरित्राच गायत्रीगि
रिशप्रिया गूढरूपागुरावती गुर्वीगौरववर्द्धिनी
॥३४॥ गृहपीडाहरागुंद्रा गरघ्नी गानवत्सला ॥ चा
र्मीचारित्रनिलया चित्रकृच्चित्ररूपिणी ॥३८॥ चं
पकुंदन सुश्लंबुस्रवीनी याचिरस्थिरा ॥ चा
रुचंपकमालाढ्याचस्मिताशेषदुष्कृता ॥४०॥
चिदाकाशवहाचिंत्या चेत्रामरवीजिता ॥ चोदि
ताशेषषट्त्रिंनाचर्चिताशेषमंडला ॥४१॥ छेदि
ताखिलपापोघा छद्मघ्नी छलहारिणी छिन्न
त्रिविष्टपतला छेदिशेषबंधना ॥ छुरिता
मृतधारोघा छिन्नैनाः छंदगामिनी ॥ छत्रीकृ
तमरालोघा छटीकृतनिजामृता ॥४२॥ जाज्ञ
ल्या जगन्माता जप्या जंवालवीचिका ॥ जयाज

नार्द्दन प्रीता जुष्टलीया जगद्धिता ॥४४॥ छत्रीकृ
तन्मरालौघा छटीकृत निशामतम जीवनं जीव
नप्राणा जगत्क्षेत्र जगन्नायकी ॥ जीवजीवातु
तिलका जन्मीजन्म निवर्हिनी ॥४५॥ नाडज वि
ध्वंसनकरी जगद्योनिर्जलाविला ॥ जगदानं
द जननी जलजा जलजेक्षणा ॥४६॥ जनलोच
न पीयूषा जटा तटा विहारिणी ॥ जयंती जंबु
पूकद्वीप जनित ज्ञान विग्रहा ॥४७॥ सत्क्री
वाद्य कुशला सल्लसत्पाल जलावृता ॥ सिंहीरा
वं ध्वा सांकार कारिणी सरस्वती ॥४८॥ टी
किना खिलपानाहला टं कि कैनोद्दिपाटने ॥ टंका
रन त्यक्त भोला टीकिनी समहातटा ॥४९॥
डंबरप्रवहा डीनराजहंसकुला कुला ॥ डमडु
मरुहंसाच टामसेक महोडका ॥५०॥ ॥ऽऽऽ॥॥

॥४॥ त्रैफिनाशेषनिर्वाणा तत्क्षानादचलाञ्चला
त्रुटिबिंदुस्वरज्ञानी ठणत्कृद्वालिनपातका ॥५१
तर्पली तीर्थती थी च त्रिपद्या त्रिदशेश्वरी
त्रिलोकगोप्त्री तापेशी त्रैलोक्यपरिवंदिता ॥५२॥
त्रिलताप जितय संहंत्री तेजोवसनविवर्द्धिनी ॥ त्रिल
क्ष्म्या तारिणी तारा त्नाराधपतिकरार्चिता ॥५३॥
त्रैलोक्यपावनीपुण्या तुष्टिदा तुष्टिरूपिणी
तृष्णाछेत्री तीर्थमाता त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥
॥५४॥ तमोमयी तमोरूपा तपस्तोमफलप्रदा ॥
त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्तिस्तृप्तिकृत्तत्वरूपिणी
॥५५॥ त्रैलोक्यसुंदरी तुर्या तुर्यातीतपदप्रदा
त्रैलोक्यलक्ष्मी त्रिपदी तथ्यांतिमरचंद्रि
का ॥५६॥ तेजोगर्भा तपःसारा त्रिपुरारिशि

रेगहा॥ त्रयीस्वरूपिणी तन्वीतपनांगजभीति

नुत्॥५७॥ तरिस्तरणिजामित्रं तर्पिताशेषपूर्वजा

तुलाविरहिता तीव्रपापतूलतनूनपात्॥५८॥ दा

रिद्र्यदमनी दीक्ष्या दुःप्रेक्ष्या दिव्यमंडना॥ दीक्षा

वनी दुराबाध्या द्राक्षामधुरवारिभृत्॥५९॥

दर्शितानेककुतुका दुष्टदुर्जयदुःखहृत्

दैन्यहृद्दुरितघ्नीच दानवारिपदाब्जजा॥६०॥

दंदशूकविषघ्नीच दारिताघौघसंततिः॥द्रु

ता देवद्रुमच्छन्ना दुर्वाराघविघातिनी॥६१॥द

मग्राह्या देवमाता देवलोकप्रदर्शिनी॥देवदेव

प्रियादेवी दिक्पालपददायिनी॥६२॥दीर्घा

युःकारिणी दीर्घा दोग्ध्री दूषणवर्जिता॥दुग्धा

म्बुवाहिनी दोह्या दिव्या दिव्यगतिप्रदा॥६३॥

॥५॥ धुनदी दीनशरणं देहि देहनिवारिणी ॥ द्राघी
यसी दाढ्यहंत्री दितपातकसंततिः ॥६४॥ दूर
देशांतरचरी दुर्गदेववल्लभा ॥ दुर्वृत्तघ्नी दुर्वि
गाह्या दयाधारा दयावती ॥६५॥ गोविंदमोविं
दहेमसारे ॥ दुरासदा ज्ञानशीला द्र विली
द्राव हिलास्नुता ॥ दैत्यदानवसंभुद्धिकर्मी दु
र्बुद्धिहारिणी ॥६६॥ दानसारा दयासारा दा
वाभूमिविगाहिनी ॥ दृष्टादृष्टफलप्राप्तिर्दे
वतावंदवंदिता ॥६७॥ दीर्घव्रता दीर्घदृष्टिर्दी
प्ततोया दुरालभा ॥ दंडयित्री दंडनीतिर्दुष्टदंड
धराचिंता ॥६८॥ दुरोदरघ्नी दावार्चिर्द्रवदुद्वे
कशोषधिः ॥ दीनसंतापशमनी दात्री दवथुवै
रिणी ॥६९॥ दरीविदारणपरा दांता दांतजनप्रि

या ॥ दारितादितदैत्यार्दुर्गा दुर्गारत्यप्रचारिणी ॥[illegible]॥
वा धर्मद्रवा धर्मधुरा धेनुर्धीरा धृतिर्ध्रुवा धेनुदा
नफलस्पर्शा धर्मकामार्थमोक्षदा ॥७१॥ धर्मो
र्मिवाहिनी धुर्या धात्री धात्रीविभूषणा ॥ धर्म
णी धर्मशीला च धन्विकोटिकृतावना ॥७२॥
धातृपापहरा ध्येया धावनी धूतकल्मषा ॥ ॥
धर्मधारा धर्मसारा धनदा धनवर्द्धिनी ॥७३॥
धर्माधर्मगुणच्छेत्री धत्तूरकुसुमप्रिया ॥ धर्मेशी
धर्मशास्त्रज्ञा धनधान्यसमृद्धिकृत् ॥७४॥ ध
र्मलभ्या धर्मजला धर्मप्रसवधर्मिणी ॥ ध्या
नगम्यस्वरूपा च धरणी धातृपूजिता ॥७५॥
धूर्धूर्जटिजटासंस्था धन्या धीर्धारणावती ॥
नंदा निर्वाणजननी नंदिनी नुन्नपातका ॥७६॥

श्र

ए॥ निषिद्ध विशुद्ध निर्वपाणि त्रानंदप्रकाशिनी नमो
गलचरी नूतिनम्या नारायलीनुता ॥७७॥ निर्म
लो निर्मला ख्याना नाशिनी तापसंपदाम ॥ निय
ता नित्य सुख दा नानाश्चर्य महानिधिः ॥७८॥ नंदी
नंदसरोमाता नायिका नाकदीर्घिका ॥ नष्टेह्वर
ल ह्रीरुच नंदनानंददायिनी ॥७९॥ निर्लिकारो
षभूवनाभिः संज्ञा निरूपद्रवा ॥ निरालंबा निः
प्रपंचा निर्लोपित महाबला ॥८०॥ निर्मला ज्ञा
नजननी निःशेष प्राणि तापहृत ॥ नित्याल्ल
वा नित्यन्नप्रा नमस्कार्या निरंजना ॥८१॥
नष्टावती निरातंका निर्लेपा निष्कलात्मिका
निर्वैद्या निरीहाच नीललोहितमध्यगा ॥८२॥ नं
दिनी गिगलस्तन्या नागानंदननागात्मजा ॥ निः

॥

ब्रह्मसूलानाकनदी निरयार्णवदीर्घनौ ॥ ८२ ॥ पुण्य
प्रदा पुण्यगर्भा पुण्या पुण्यतरंगिणी वपुफला
पूर्णा पूर्णतार्तिप्रभंजनी ॥ ८४ ॥ प्राणदा प्राणिजन
नी प्राणेशी प्राणरूपिणी ॥ पद्मालयापराश
क्तिः पुरजित्परमप्रिया ॥ ८५ ॥ परापरफलप्राप्तिः
पावनी च पयस्विनी ॥ परानंदप्रकृष्टार्थप्रतिष्ठा
पालनी परा ॥ ८६ ॥ पुराणपठिता प्रीता प्रणवा
क्षररूपिणी ॥ पार्वती प्रेमसंपन्ना पशुपाशवि
मोचिनी ॥ ८७ ॥ परमात्मस्वरूपा च परब्रह्मप्रका
शिनी ॥ परमानंदनिष्यंदा प्रायश्चित्तस्वरूपिणी
॥ ८८ ॥ पानीयरूपनिर्वाणा परित्राणपरायणा ॥
पापेंधनदवज्वाला पापारिः पापनामनुत् ॥ ८९ ॥
परमैश्वर्यजननी प्रज्ञा प्राज्ञापरा वरा प्रत्यक्ष
लक्ष्मीः पद्माक्षी परव्योमामृतस्रवा ॥ ९० ॥ प्रस

॥७॥ स्वरूपा प्रतिष्ठिः पूता प्रत्यक्षदेवता पिनाकिव
रमप्रीता परमेष्ठिकमंडलुः ॥८१॥ पद्मनाभ
पदार्घ्येण प्रसूता पद्ममालिनी ॥ परर्द्धिदा पुष्टि
करी पथ्या पूर्त्तिः प्रभावती ॥८२॥ पुनाना पीतग
र्भघ्नी पापपर्वतनाशिनी ॥ फलिनी फलहस्ता
च फुल्लांबुजविलोचना ॥८३॥ फालितैनोम
हाक्षेत्रा फणिलोकविभूषणम फेणछल
प्रणुन्नैनाः फुल्लकैरवगंधिनी ॥८४॥ फेनि
लाछांबुधाराभा फडुच्चाटितपातका ॥ फा
णितस्वादुसलिला फांटपथ्यजलावि
ला ॥८५॥ विश्वमाता च विश्वेशी विश्वावि
श्वेश्वरप्रिया ॥ ब्रह्मण्या ब्रह्मकृद् ब्राह्मी ब्र
ह्मिष्ठा विमलोदका ॥८६॥ विभावरी च वि

12

॥७॥

रजा विक्रांतानेक विरूपा॥ विश्वमित्रं विष्णुपदी
वैष्णवी वैष्णव प्रिया॥ ६॥ विरूपाक्ष प्रियकरी
विभूतिर्विश्वतोमुखी॥ विपाशा वैबुधी वेद्या वे
दाक्षरसमावृता॥ ७॥ वेद्या वेगवती वद्या वंदि
शीर्षप्रमनादिनी॥ वरदा विप्रकृष्टा च विशिष्ट
च विशोधनी॥ ८॥ विद्याधरी विशाका च व
धोवं द निष्ठे विका॥ बृहदका बलवती व्यो
मस्था विबुधप्रिया॥ ९॥ वाणी वेदवती वि
त्ता ब्रह्मविद्यातरंगिणी ब्रह्मांडकोटिव्याप्ती व
ब्रह्महत्यापहारिणी॥ १॥ ब्रह्मेशविष्णुरूपा च
बुद्धिर्विभव वर्द्धिनी विलासी सुखदा वश्या व्या
पिनी च वकारकिः॥ १२॥ वबांकमोलिनिलया
वियज्योतिर्विप्रभंजिनी॥ विनीता विनता ब्रध्नतनया
विनयान्विता॥ १३॥ विपंचीवाद्यकुशला वेणुस

॥८॥ त्तिविचक्षणा वर्चस्करी बलकरी बलोन्मूलित
कल्मषा ॥ विपाप्मा विगतातंक विकल्प परि
वर्जिता ॥ वृष्टिकर्त्री वृष्टिजला विधि विं
छिन्नबंधना ॥ व्रतरूपा वित्तरूपा बहु विघ्न
विनाशकृत् ॥ वसुधारा वसुमती विचित्रांगी
विभावसुः ॥६॥ विजया विश्ववीजं च वामदे
वी वरप्रदा ॥ वृषाश्रिता वृषघ्नी च विज्ञाने
र्म्यंशुमालिनी ॥७॥ भव्या भोगवती भद्रा
भवानी भूतभावनी ॥ भूतधात्री भयहरा भ
क्तदारिद्र्यघातिनी ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदा भेशी
भक्तस्वर्गापवर्गदा ॥ भागीरथी भानुमती भा
ग्यं भोगवती भृतिः ॥८॥ भवप्रिया भवद्वेष्ट्री
भूतिदा भूतिभूषणा ॥ भाललोचनभावज्ञा
भूतभव्यभवत्प्रभुः ॥९॥ भ्रांतिज्ञानप्रशमनी ॥८॥

ऽनेकब्रह्मांडमंडया ॥ भुक्तिदा मुक्तिसुलभा मा
ग्यवहृद्धिगोचरा ॥११॥ शांतिलोपद्रवकुला श
मनोऽत्यन्तसुखप्रदा ॥ सत्यलीयात्मि देवु माता-
भवा भावसहृदयिनी ॥१२॥ मंदाकिनी महानं
दा माता मुक्तितरंगिणी ॥ महेन्द्रवामती महा
पुण्या मुदाकरी ॥१३॥ मुनिस्तुता मोहहंत्री म
हातीर्था मधुस्रवा ॥ माधवीमानिनीमान्या
मनोरथपथातिगा ॥१४॥ मोक्षदा मतिदा मु
ख्या महाभाग्यजनाश्रिता ॥ महावेगवती मेध्या
महामहिमभूषणा ॥१५॥ महाप्रभावा महती
मीनचंचललोचना ॥ महाकारुण्यसंपूर्णा
महर्द्धिश्च महोत्पला ॥१६॥ मूर्तिमन्मुक्तिरमणी
मणिमाणिक्यभूषणा ॥ मुक्ताकलापनेपथ्या
मनोनयननंदिनी ॥१७॥ महापातकराशिघ्नी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by S3 Foundation, USA

महादेवार्द्धहारिणी ॥ महोर्मिमालिनी मुक्ता
महादेवी मनोन्मयी ॥१९॥ महापुण्योदयप्राप्या
मायातिमिरचंद्रिका महाविद्या महामाया म
हामेधा महौषधं ॥२०॥ मालाधरी महोपाया
महोरगविभूषणा महामोहप्रशमनी महा
मंगलमंगलं ॥२१॥ मार्त्तंडमंडलचरी महा
लक्ष्मी मदोज्झिता ॥ यशस्विनी यशोदा च
योग्या युक्तात्मसेविता ॥२२॥ योगसिद्धिप्र
दा याज्या यज्ञेशपरिपूजिता यज्ञेशी यज्ञ
फलदा यजनीया यशस्करी ॥२३॥ यमि
सेव्या योगयोनिर्योगिनी युक्तबुद्धिदा ॥
योगज्ञानप्रदा युक्ता यमाद्यष्टांगयोगयु
क्ता ॥२४॥ यंत्रिताघौघसंचारा यमलोकनिवा
रिणी ॥ यातायातप्रशमनी यातनानां म

कुंतनी ॥२५॥ यामिनीश्च हिमास्थोद युगधर्म
विवर्जिता ॥ रेवतीरतिकृद्रम्या रत्नगर्भा रमा
रतिः ॥२६॥ रत्नाकरप्रेमपात्रं रसज्ञा रसरूपि
णी ॥ रत्नप्रासादगर्भा च रमणीयतरंगिणी
॥२७॥ रत्नार्चा रुद्ररमणी रागद्वेषविनाशिनी
॥ माभ्रामा रम्यरूपा रोगिजीवातुरूपिणी ॥२८॥
रुचिकृद्रोचनी रम्या रुचिरा रोगहारिणी ॥
राजहंसा रत्नवती राजत्कल्होलराजिका ॥
॥२९॥ रमणीयकरेखा च रुजारी रोगशोषिणी
राकारंकार्त्तिशमनी रम्या लोलंबराविणी ॥
॥३०॥ रागिणी रंजितशिवा रूपलावण्यसे
वधिः ॥ लोकप्रसूर्लोकवंद्या लोलत्कोल्लो
लमालिनी ॥३१॥ लीलावती लोकभूमिर्लो
कलोचनचंद्रिका ॥ लेखस्रवंती लटभा लघु

वेगाल घुलहत ॥३२॥ लास्यतरंगहस्ता च
ललिता लालयमंगि ववगा लोकवंद्य घुलोक
धात्री लोकोत्तरगुणोर्जिता ॥३३॥ लोकत्रय
हिता लोका लक्ष्मीर्लक्षणलक्षिता ॥ लीला
लक्षितनिर्वाणा लावण्यामृतवर्षिणी ॥३४॥
वैश्वानरी वासवेड्या वंध्यत्वपरिहारिणी
वासुदेवांघ्रिरेणुघ्ना वज्रवज्रनिवारिणी ॥३५॥
शुभावती शुभफला शांतिः शंतनुवल्लभा
शूलिनी शैशववया शीतलामृतवाहिनी
॥३६॥ शोभावती शीलवती शोषिताशेषकि
ल्बिषा ॥ शरण्या शिवदा शिष्टा शरजन्म
प्रसूः शिवा ॥३७॥ शेमाशामनगर्भेष्टी शि
तिकंठमहाप्रिया ॥ शुचिः शुचिकरी शेषा

शेषशायिपदे दुर्गा ।। श्रीनिवासकृतिप्र
ह्वा श्रीमती: श्रीः कृष्णवृत्ता ।। कृष्णविद्याकृ
ष्णावर्ता कृतानंदा कृतिस्तुतिः ।।३७।। जावे
तरघ्नी शाबरी शांबरी रूपधारिणी ।।३८।।
शमशानशोधनी शांता शास्त्रघ्नतद्यति
खुता ।। शालिनी शालिशोभाढ्या शि
खिवाहनगर्भभृत ।।३९।। हंसनीयच
रित्राच शांतिता शेषपातका ।। खड्गखेटध
रा संपन्ना खड्गकृतिस्वरूपिणी ।।४०।। संहता
पसलिला षट्पापदनदीशता ।। स
रिद्वरा च सुरसा सुप्रभा सुरदीर्घिका ।।४१
स्वः सिंधुः सर्वदुःखघ्नी सर्वव्याधिमहौ
षधं ।। सेव्या सिद्धिः सती सूक्तिः स्कंदसू
श्च सरस्वती ।। संपत्तरंगिणी स्तुत्या स्थाणु

॥२१॥ मौलिकृतास्पदा ॥ स्थैर्यदत्सुभगा सौख्यस्त्री
सुसौभाग्यदायिनी ॥४४॥ स्वर्गनिःश्रेणिकामू
क्ता स्वधा स्वाहा सुधाजला ॥ समुद्ररूपिणी
स्वर्ग्या सर्वपातकवैरिणी ॥४५॥ स्मृताघहा
रिणी सीता संसाराब्धितरंडिका ॥ सौभाग्य
सुंदरी संध्या सर्वसारसमन्विता ॥४६॥ ह
रप्रिया हृषीकेशी हंसरूपा हिरिण्मयी
हताघसंघा हितकृद्धेला हेलाघगर्वहृत् ॥
॥४७॥ क्षेमदा क्षालिताघौघा क्षुद्रविद्राविणी
क्षमा ॥ इति नामसहस्रं हि गंगायाः कलशो
द्भव कीर्तयित्वा नरः सम्यक् गंगास्नान
फलं लभेत ॥४८॥ सर्वपापप्रशमनं सर्वविघ्न
विनाशनं ॥ सर्वस्तोत्रजपाच्छ्रेष्ठं सर्वपावन
पावनं ॥४९॥ श्रद्धयाभीष्टफलदं चतुर्वर्ग ॥२२॥

समह्निकृत ॥ सकृत्पाठादवाप्नोति ह्येक क्रतु
फलं मुनेः॥ सर्वतीर्थेषु यः स्नातः सर्वयज्ञेषु
दीक्षितः॥ तस्य यत्फलमुद्दिष्टं त्रिकालपठ
नात्सकृत ॥ सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सम्यक् ची
र्णेषु पाण्डव तत्फलं समवाप्नोति त्रिसंध्यं नि
यतः पठेत् ॥५२॥ स्नानकाले पठेद्यस्तु यत्र कु
त्र जलाशये॥ तत्र सन्निहितान्नूनं गंगा त्रिपु
थगा मुने ॥५३॥ श्रेयोऽर्थी लभते श्रेयो धनार्थी
लभते धनं ॥ कामी कामानवाप्नोति मोक्षार्थी
मोक्षमाप्नुयात् ॥५४॥ वर्षं त्रिकालपठनाद्घु
घृयाप्नुचिमानसः ॥ फलकालाग्निगमनाद
पुत्रः पुत्रवान्भवेत् ॥५५॥ नाकालमरणं तस्य
नाग्निचौराहिसाध्वसं ॥ नाम्नां सहस्रं गंगायायो
जपेच्छ्रद्धया मुने गंगास्नानसहस्रं तु ल्हत्याग्रा

॥१२॥

मांतरं व्रजेत् ॥५६॥ कार्यसिद्धिमवाप्नोति निर्वि
घ्नो गेहमाविशेत् ॥५७॥ तिथिवारर्क्षयोगानां न
दोषः प्रभवेत्तदा ॥ ॥ यद्यज्जपत्यं व्रजेदेतत्र से
त्रंग्रामं नरं नरः ॥५९॥ आयुरारोग्यसंतनमं
सर्वोपद्रवनाशनं ॥ सर्वसिद्धिकरं पुंसां गं
नाम सहस्रकं ॥६०॥ जन्मांतरसहस्रेषु य
त्पापं समुपार्जितं ॥ ॥ गंगानाम सहस्रस्य
जपनात्तत्क्षयं व्रजेत् ॥६१॥ ब्रह्महा ब्रह्मघ्नो मद्यपः स्व
र्णस्तेयी च गुरुतल्पगः तत्संयोगी भ्रूणहंता
मातृहा पितृहा मुने ॥६२॥ विश्वासघाती ग
रदः कृतघ्नो मित्रघातकः ॥ अग्निदो गोवध
करो गुरुद्रव्यापहारकः ॥६३॥ महापातक
युक्तोपि संयुक्तोप्युपपातकैः ॥ मुच्यते श्र

॥१२॥

23

ह्याज्ञया गंगानामसहस्रकम ॥ ७३ ॥ आधि
व्याधिपरिक्षिप्ता घोरतापपरिप्लुताः ॥ मुच्यते
सर्वदुःखेभ्यस्तवस्यास्यानुकीर्त्तयात ॥ ७४ ॥
संवत्सरेण युक्तात्मा पठन्भक्तिपरायणः
अभिप्सितांल्लभेत्सिद्धिं सर्वैः पापैः प्रमुच्यते
॥ ७५ ॥ संशयाविष्टचित्तस्य धर्मविद्वेषिणो
पिचिदं ॥ दांभिकस्यापिहिंस्रस्यचेतो धर्मप
रंभवेत ॥ ७६ ॥ वर्णाश्रमपथीनस्तु काम
क्रोधविवर्जितः ॥ यत्फलंलभतेज्ञानी तदा
प्नोत्यस्यकीर्त्तिनात ॥ ७७ ॥ गायत्र्ययुतजप्ये
न यत्फलं समुपार्जितं ॥ सकृत्पठनतः स
म्यक तदशेषमवाप्नुयात ॥ ७८ ॥ गांदत्वा वेद
विदुषे यत्फलंलभते कृती ॥ तत्पुण्यंसम
गाख्यातं स्तवराजसकृज्जपात ॥ ७९ ॥

॥१३॥ गुरुशुश्रूषणं कुर्वन्यावज्जीवं नरोत्तमः । यत्पु
ण्यमर्जयेत्तद्वाग्वर्षं त्रिषवणं जपन्॥१४॥ वे
दपारायणात्पुण्यं यदस्य परिपाठयते॥ त
त्स्यात्षण्मासेन लभते त्रिसंध्यं परिकीर्तनात्॥१
५॥ गंगायास्तवराजस्य प्रत्यहं परिशीलना
त्॥ शिवभक्तिमवाप्नोति विष्णुभक्तोऽथवा
भवेत्॥१६॥ यः कीर्तयेदनुदिनं गंगानाम
सहस्रकं तत्समीपे सहचरी गंगादेवी सदा
भवेत्॥१७॥ स विजयी भवेत्॥ सर्वत्र सुखमाप्नो
ति जाह्नवीस्तोत्रपाठतः॥ सदाचारी स विज्ञेयः
सशुचिस्तु सदैव हि॥ कृतसर्वसुरार्चः सकी
र्तयेदिमांस्तुतिं॥१८॥ तस्मिंस्तुष्टे भवेत्तुष्टा
जाह्नवी नात्र संशयः॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
न गंगाभक्तं समर्चयेत्॥१९॥ स्तवराजमि

27

मंगां गंगास्तु या यः श्रवै पठेत् ॥ श्रावयेद्वा पि
तद्वद्रक्तेन दंभलोभविवर्जितः ॥ ७७ ॥ मुच्य
ते त्रिविधैः पापै मनोवाक्कायसंभवैः ॥
दृत्णात्रिः पापत्तामेति पितॄणां च प्रियो भ
वेत् ॥ ७८ ॥ सर्वदेवप्रियश्चापि सर्वर्षिगण
संमतः ॥ अंते ते विमानमारुह्य दिव्य हंसेश
न संवृतः ॥ ७९ ॥ दिव्याभरणसंपन्नो दिव्यभो
गसमन्वितः ॥ नंदना दिवने भ्यै रं देव व
र्त्त स्व मोदते ॥ ८० ॥ मुच्यमाने तु विप्रेषु श्रा
द्धकाले विशेषतः ॥ तपनि दं [illegible] त्रे पितॄ महा
णां तृप्तिकारकं ॥ ८१ ॥ यावंति तत्र शिक्था
नि यावंतो बुकणास्थिताः ॥ तावंत्येव हि वर्षा
णि मोदंते स्वः पितामहाः ॥ ८२ ॥ तथा प्रीणंति
पितरो गयायां पिंडदानतः ॥ तथैव तृप्युः

आब्दैस्तव स्यास्यान्नु मुक्तवात ॥५३॥ एतत्क्षे
त्रं गंगेयस्य लिखितं परिपठ्यते ॥ तत्र पाप
भयं नास्ति अचित दुर्वनं सदा हृत ॥५४॥ अग
स्ते किं बहुनोक्तेन अलमेभिर्विस्तृतैर्वचः ॥ सं
शयो नात्र कर्तव्यः संदिग्धं रिकलेन हि ॥५५
यावंति मर्त्ये स्वर्गे जालि मंत्रजालान्यनेक
शः तावंति सर्वराजस्य गांगेयस्य समानि न
॥५६॥ यावज्जन्मजपे द्भक्त्या ना म मेतत्स
हस्रकं ॥ स कीटकोऽपि मर्त्यो न पुनर्गर्भमा
विशेत ॥५७॥ नित्यं नि म ध्याने तु छांजये क्षे
त्र मृत्तमं ॥ अन्यत्रापि विपन्नः स गंगातीरे मृ
तो भवेत ॥५८॥ एतत्क्षेत्रं वरं रम्यं पुरा प्रो
क्तं पिनाकिना ॥ विष्णवे निजभक्ताय मुक्ति

29

वीजाहरस्यदं गंगास्नानव्रतिनिधिः स्तोत्र
मेतन्मयेरितं सिद्धात्मसूत्री कुर्वीत स्मादेतत्स्तो
त्रं जपेत्सुधीः ॥ ९ ॥ इति श्री स्कंदपुराणे काशी
खंडे गंगासहस्रनामैकोनत्रिंशत्तमोऽध्या
यः ॥ इति श्री गंगासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तं
लिखितं नानकगीरामेण इदं वै स्तोत्रं गंगस्नान
स्कंद उवाच ॥ अथ नगस्य महाभाग सर्वं स
गरमगीरथः आराध्य श्री महादेव मुद्दधी
र्षुः पितामहान् ॥ ब्रह्मशापविनिर्दग्धान्स
र्वान्सगर्षिसत्तमः ॥ महता तपसा स्वामि मानि
नाय त्रिवर्त्मगां ॥ तदा प्रभृति लोकानां हि
ताय महतेन्दघः समानेष्वीतततोगंगोपरा
सीन्नास्ति कलिका ॥ १ ॥ आनंदकाननं वि

॥१५॥ श्री चक्रानुस्वरूपं लौ हरेः परब्रह्मैकसंचेत्रे
लीलामोदसमर्पकम्॥ ग्राप पा मा स तां गं गां
दैलीपिः पुरत्नस्वरत्न निर्वाण काशनाद्यत्र
काशीति विष्णुपुरी॥५ श्रीराम जी सहाय॥ श्री॥